



# Tanushree

08 Feb 1997

03:47 AM

Amritsar

Model: Web-MyKundli

Order No: 121601301

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 7-08/02/1997  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्र-शनिवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 03:47:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 51:09:17 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Amritsar  
राज्य \_\_\_\_\_: Punjab  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 31:35:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 74:56:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:30:16 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 03:16:44 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:14:11 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 12:29:00 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:19:17 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:09:55 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:50:38 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 25:22:33 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 28:47:23 वृश्चिक

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मकर - शनि  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: धनिष्ठा - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: मंगल  
योग \_\_\_\_\_: वरियान  
करण \_\_\_\_\_: किंस्तुघ्न  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: सिंह  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: मार्जार  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: गी-गीता  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कुम्भ

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	माघ	19
पंजाबी	संवत : 2053	माघ	27
बंगाली	सन् : 1403	माघ	25
तमिल	संवत : 2053	थई	26
केरल	कोल्लम : 1172	मकरम	26
नेपाली	संवत : 2053	माघ	26
चैत्रादि	संवत : 2053	माघ	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2053	माघ	कृष्ण 1

### पंचांग

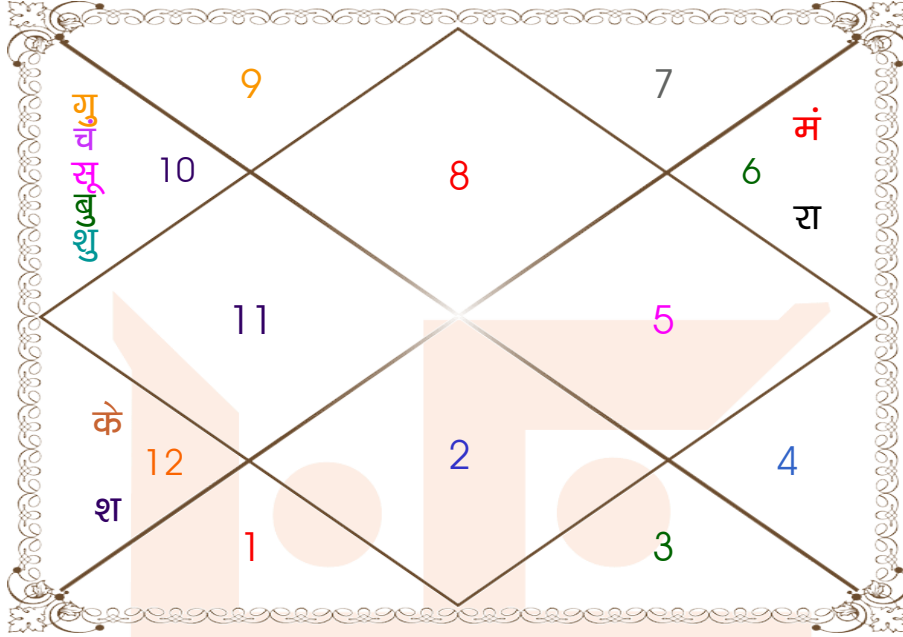
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 20:36:13  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : श्रवण  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:52:23 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : धनिष्ठा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:28:54 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : वरियान  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : चतुष्पाद  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 10:30:42 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : किंस्तुघ्न  
भयात \_\_\_\_\_ : 24:46:32  
भभोग \_\_\_\_\_ : 52:22:08  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : मंगल 3 वर्ष 8 मा 6 दि

### घात चक्र

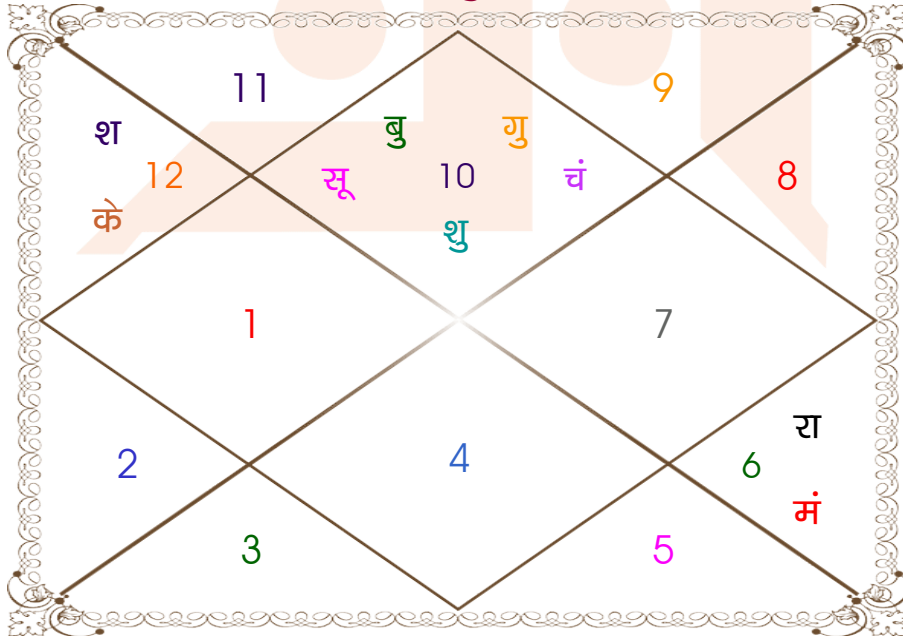
मास \_\_\_\_\_ : वैशाख  
तिथि \_\_\_\_\_ : 4-9-14  
दिन \_\_\_\_\_ : मंगलवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रोहिणी  
योग \_\_\_\_\_ : वैधृति  
करण \_\_\_\_\_ : शकुनि  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मूषक  
लग्न \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
मंगल \_\_\_\_\_ : मीन  
बुध \_\_\_\_\_ : धनु  
गुरु \_\_\_\_\_ : मेष  
शुक्र \_\_\_\_\_ : वृष  
शनि \_\_\_\_\_ : मकर  
राहु \_\_\_\_\_ : मिथुन

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



**Meenna Salaria Astro & Numerio**

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

के श			
बु शु	चं सू		
	ल		रा मं

## लग्न कुंडली

		के श
		शु चं गु
	सू बु	
मं रा		ल

विंशोत्तरी  
मंगल 3वर्ष 8मा 6दि  
मंगल

08/02/1997

17/10/2113

मंगल	16/10/2000
राहु	16/10/2018
गुरु	16/10/2034
शनि	16/10/2053
बुध	16/10/2070
केतु	16/10/2077
शुक्र	16/10/2097
सूर्य	18/10/2103
चन्द्र	17/10/2113

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 0मा 19दि  
संकटा

28/02/2023

28/02/2031

संकटा	08/12/2024
मंगला	27/02/2025
पिंगला	08/08/2025
धान्या	09/04/2026
भामरी	28/02/2027
भद्रिका	08/04/2028
उल्का	08/08/2029
सिद्धा	28/02/2031

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

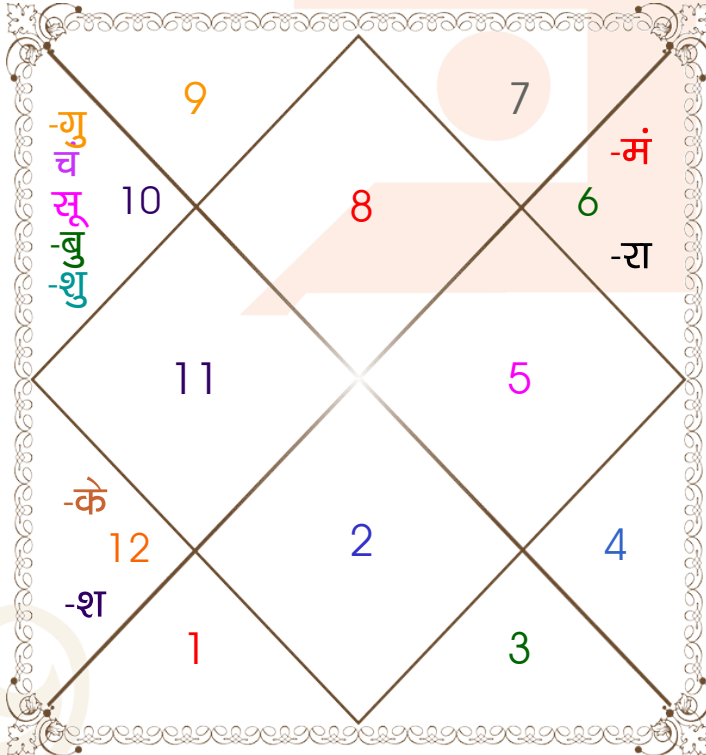
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	28:47:23	320:04:17	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
सूर्य			मक	25:22:33	01:00:48	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			मक	29:38:46	15:16:59	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	सम राशि
मंगल	व		कन्या	12:04:58	00:01:26	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
बुध			मक	04:18:08	01:25:01	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	सम राशि
गुरु			मक	10:13:53	00:13:54	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	नीच राशि
शुक्र			मक	12:07:19	01:15:07	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
शनि			मीन	10:27:18	00:06:02	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	सूर्य	सम राशि
राहु	व		कन्या	05:28:37	00:04:30	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	05:28:37	00:04:30	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	मूलत्रिकोण
हर्ष			मक	11:38:46	00:03:27	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	---
नेप			मक	04:25:52	00:02:10	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
प्लूटो			वृश्चि	11:32:49	00:01:00	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	---
दशम भाव			कन्या	14:04:59	--	हस्त	--	13	बुध	चंद्र	गुरु	--

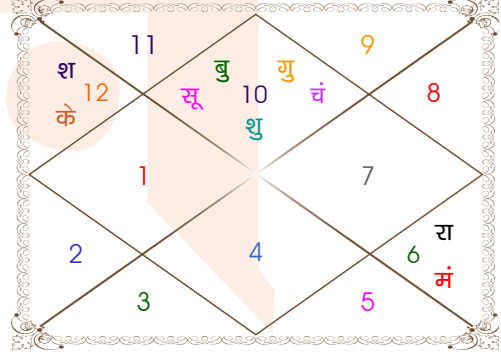
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:02

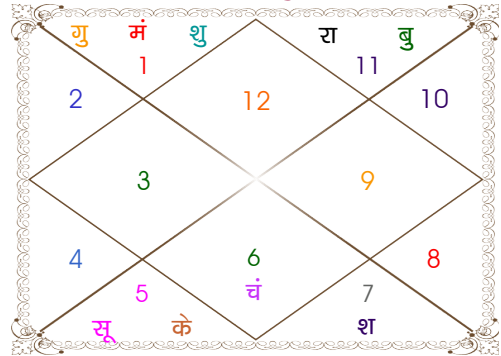
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 16:20:19	वृश्चिक 28:47:23
2	धनु 16:20:19	मकर 03:53:15
3	मकर 21:26:11	कुम्भ 08:59:07
4	कुम्भ 26:32:03	मीन 14:04:59
5	मीन 26:32:03	मेष 08:59:07
6	मेष 21:26:11	वृष 03:53:15
7	वृष 16:20:19	वृष 28:47:23
8	मिथुन 16:20:19	कर्क 03:53:15
9	कर्क 21:26:11	सिंह 08:59:07
10	सिंह 26:32:03	कन्या 14:04:59
11	कन्या 26:32:03	तुला 08:59:07
12	तुला 21:26:11	वृश्चिक 03:53:15

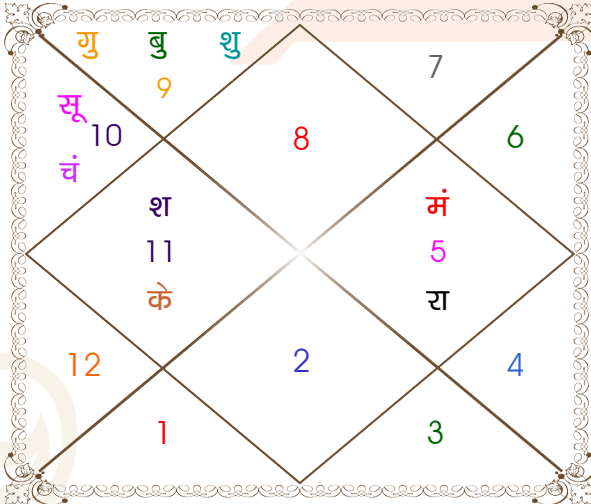
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	28:47:23
2	मकर	02:22:25
3	कुम्भ	09:21:11
4	मीन	14:04:59
5	मेष	12:53:12
6	वृष	06:50:03
7	वृष	28:47:23
8	कर्क	02:22:25
9	सिंह	09:21:11
10	कन्या	14:04:59
11	तुला	12:53:12
12	वृश्चिक	06:50:03

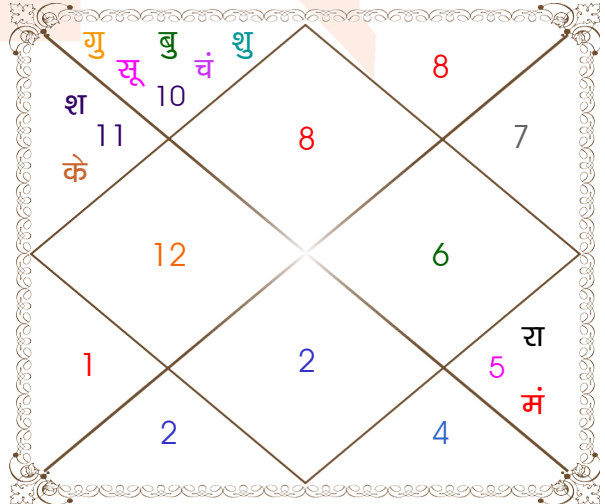
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

**भोग्य दशा काल : मंगल 3 वर्ष 8 मास 6 दिन**

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
08/02/1997	16/10/2000	16/10/2018	16/10/2034	16/10/2053
16/10/2000	16/10/2018	16/10/2034	16/10/2053	16/10/2070
00/00/0000	राहु 29/06/2003	गुरु 04/12/2020	शनि 19/10/2037	बुध 14/03/2056
00/00/0000	गुरु 22/11/2005	शनि 17/06/2023	बुध 28/06/2040	केतु 11/03/2057
08/02/1997	शनि 28/09/2008	बुध 22/09/2025	केतु 07/08/2041	शुक्र 10/01/2060
शनि 17/04/1997	बुध 17/04/2011	केतु 29/08/2026	शुक्र 07/10/2044	सूर्य 15/11/2060
बुध 14/04/1998	केतु 05/05/2012	शुक्र 29/04/2029	सूर्य 19/09/2045	चंद्र 17/04/2062
केतु 10/09/1998	शुक्र 05/05/2015	सूर्य 15/02/2030	चंद्र 20/04/2047	मंगल 14/04/2063
शुक्र 10/11/1999	सूर्य 29/03/2016	चंद्र 17/06/2031	मंगल 29/05/2048	राहु 31/10/2065
सूर्य 17/03/2000	चंद्र 28/09/2017	मंगल 23/05/2032	राहु 05/04/2051	गुरु 06/02/2068
चंद्र 16/10/2000	मंगल 16/10/2018	राहु 16/10/2034	गुरु 16/10/2053	शनि 16/10/2070

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
16/10/2070	16/10/2077	16/10/2097	18/10/2103	17/10/2113
16/10/2077	16/10/2097	18/10/2103	17/10/2113	00/00/0000
केतु 15/03/2071	शुक्र 15/02/2081	सूर्य 03/02/2098	चंद्र 17/08/2104	मंगल 15/03/2114
शुक्र 14/05/2072	सूर्य 15/02/2082	चंद्र 04/08/2098	मंगल 18/03/2105	राहु 03/04/2115
सूर्य 19/09/2072	चंद्र 17/10/2083	मंगल 10/12/2098	राहु 17/09/2106	गुरु 09/03/2116
चंद्र 20/04/2073	मंगल 16/12/2084	राहु 04/11/2099	गुरु 17/01/2108	शनि 09/02/2117
मंगल 16/09/2073	राहु 17/12/2087	गुरु 23/08/2100	शनि 17/08/2109	00/00/0000
राहु 04/10/2074	गुरु 17/08/2090	शनि 05/08/2101	बुध 17/01/2111	00/00/0000
गुरु 10/09/2075	शनि 16/10/2093	बुध 12/06/2102	केतु 18/08/2111	00/00/0000
शनि 19/10/2076	बुध 16/08/2096	केतु 17/10/2102	शुक्र 18/04/2113	00/00/0000
बुध 16/10/2077	केतु 16/10/2097	शुक्र 18/10/2103	सूर्य 17/10/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 3 वर्ष 8 मा 8 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल
22/09/2025	29/08/2026	29/04/2029	15/02/2030	17/06/2031
29/08/2026	29/04/2029	15/02/2030	17/06/2031	23/05/2032
केतु 12/10/2025	शुक्र 07/02/2027	सूर्य 13/05/2029	चंद्र 27/03/2030	मंगल 07/07/2031
शुक्र 08/12/2025	सूर्य 28/03/2027	चंद्र 07/06/2029	मंगल 25/04/2030	राहु 27/08/2031
सूर्य 25/12/2025	चंद्र 17/06/2027	मंगल 24/06/2029	राहु 07/07/2030	गुरु 11/10/2031
चंद्र 22/01/2026	मंगल 13/08/2027	राहु 07/08/2029	गुरु 10/09/2030	शनि 04/12/2031
मंगल 11/02/2026	राहु 06/01/2028	गुरु 15/09/2029	शनि 26/11/2030	बुध 22/01/2032
राहु 03/04/2026	गुरु 15/05/2028	शनि 31/10/2029	बुध 03/02/2031	केतु 11/02/2032
गुरु 18/05/2026	शनि 16/10/2028	बुध 11/12/2029	केतु 03/03/2031	शुक्र 07/04/2032
शनि 11/07/2026	बुध 03/03/2029	केतु 28/12/2029	शुक्र 24/05/2031	सूर्य 24/04/2032
बुध 29/08/2026	केतु 29/04/2029	शुक्र 15/02/2030	सूर्य 17/06/2031	चंद्र 23/05/2032
गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र
23/05/2032	16/10/2034	19/10/2037	28/06/2040	07/08/2041
16/10/2034	19/10/2037	28/06/2040	07/08/2041	07/10/2044
राहु 01/10/2032	शनि 08/04/2035	बुध 07/03/2038	केतु 22/07/2040	शुक्र 16/02/2042
गुरु 26/01/2033	बुध 11/09/2035	केतु 04/05/2038	शुक्र 27/09/2040	सूर्य 15/04/2042
शनि 14/06/2033	केतु 14/11/2035	शुक्र 15/10/2038	सूर्य 18/10/2040	चंद्र 20/07/2042
बुध 16/10/2033	शुक्र 15/05/2036	सूर्य 03/12/2038	चंद्र 20/11/2040	मंगल 26/09/2042
केतु 06/12/2033	सूर्य 09/07/2036	चंद्र 23/02/2039	मंगल 14/12/2040	राहु 18/03/2043
शुक्र 01/05/2034	चंद्र 09/10/2036	मंगल 21/04/2039	राहु 13/02/2041	गुरु 19/08/2043
सूर्य 14/06/2034	मंगल 12/12/2036	राहु 16/09/2039	गुरु 08/04/2041	शनि 18/02/2044
चंद्र 26/08/2034	राहु 26/05/2037	गुरु 25/01/2040	शनि 11/06/2041	बुध 31/07/2044
मंगल 16/10/2034	गुरु 19/10/2037	शनि 28/06/2040	बुध 07/08/2041	केतु 07/10/2044
शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु
07/10/2044	19/09/2045	20/04/2047	29/05/2048	05/04/2051
19/09/2045	20/04/2047	29/05/2048	05/04/2051	16/10/2053
सूर्य 24/10/2044	चंद्र 06/11/2045	मंगल 14/05/2047	राहु 01/11/2048	गुरु 06/08/2051
चंद्र 22/11/2044	मंगल 10/12/2045	राहु 13/07/2047	गुरु 20/03/2049	शनि 31/12/2051
मंगल 12/12/2044	राहु 06/03/2046	गुरु 05/09/2047	शनि 01/09/2049	बुध 10/05/2052
राहु 02/02/2045	गुरु 23/05/2046	शनि 08/11/2047	बुध 26/01/2050	केतु 03/07/2052
गुरु 21/03/2045	शनि 22/08/2046	बुध 05/01/2048	केतु 28/03/2050	शुक्र 04/12/2052
शनि 15/05/2045	बुध 12/11/2046	केतु 28/01/2048	शुक्र 17/09/2050	सूर्य 19/01/2053
बुध 03/07/2045	केतु 16/12/2046	शुक्र 05/04/2048	सूर्य 08/11/2050	चंद्र 06/04/2053
केतु 23/07/2045	शुक्र 22/03/2047	सूर्य 25/04/2048	चंद्र 03/02/2051	मंगल 30/05/2053
शुक्र 19/09/2045	सूर्य 20/04/2047	चंद्र 29/05/2048	मंगल 05/04/2051	राहु 16/10/2053

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

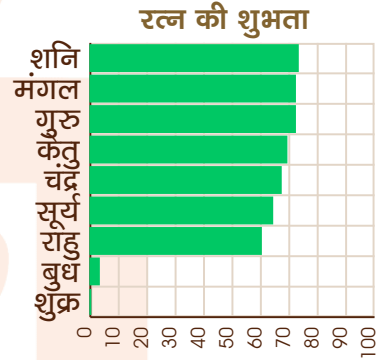
मूलांक	8
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 2, 8, 9
शत्रु अंक	3, 7,
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	73%	सन्तति सुख, पराक्रम, सुख
मूंगा	मंगल	72%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	72%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	69%	सन्तति सुख, पराक्रम
मोती	चंद्र	67%	पराक्रम, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	64%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	60%	धनार्जन, पराक्रम
पन्ना	बुध	3%	पराक्रम हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	16/10/2000	70%	73%	84%	0%	78%	0%	73%	44%	75%
राहु	16/10/2018	52%	55%	59%	3%	72%	9%	80%	72%	57%
गुरु	16/10/2034	70%	73%	78%	0%	84%	0%	73%	60%	69%
शनि	16/10/2053	52%	55%	59%	16%	72%	9%	86%	66%	57%
बुध	16/10/2070	70%	55%	72%	28%	72%	9%	73%	60%	69%
केतु	16/10/2077	52%	55%	78%	3%	72%	9%	61%	44%	82%
शुक्र	16/10/2097	52%	55%	72%	16%	72%	22%	80%	66%	75%
सूर्य	18/10/2103	77%	73%	78%	3%	78%	0%	61%	44%	57%
चंद्र	17/10/2113	70%	80%	72%	16%	72%	0%	73%	44%	57%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सुख

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है। यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जिससे धनऐश्वर्य से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। जीवन में जमीन जायदाद से भी आपको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से नित्य लाभ होता रहेगा तथा इसके कय विकय से भी आप प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी। सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही किसी विशिष्ट सम्मान भी आपको प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप अपना जीवन यापन करेंगी।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदाकदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद या तनाव भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्प ही रहेगा। वाणी से भी आप यदा कदा कठोरता का प्रदर्शन करेंगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में भी न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से आप युक्त रहेगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग भी सामान्य ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी समय समय पर लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकद्दमें या चुनाव आदि में भी आपको सफलता प्राप्त होती रहेगी। लेकिन शरीर में यदा कदा गर्मी या पित आदि से कोई परेशानी हो सकती है। परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही मामा आदि से भी सुख सहयोग की न्यूनता रहेगी परन्तु आपका सामान्य जीवन सुखी रहेगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों को आधुनिक सुख सुविधा प्रदान करने के लिए तत्पर रहेगी एवं इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। साथ ही पारिवारिक जनों से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा सभी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप ज्ञानार्जन में दुविधा होती है। उच्च शिक्षा में आंशिक रूप से बाधा आती है। स्मरणशक्ति का थोड़ा बहुत हास होता है। जातक नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की आशा होते हुए भी आंशिक रूप में नुकसान प्राप्त करता है। चाचा व चचेरे भाईयों से कलह रहता है तथा बड़े भाई के साथ झगड़ा होने की संभावना बनी रहती है। जातक अपने जन्म स्थान से प्रायः बहुत दूर रहता है एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहता है। कुछ समय बाद जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान पक्ष से थोड़ी बहुत परेशानी उठानी पड़ती है और लाभ में आंशिक बाधा उत्पन्न होती है। व्यक्ति चिन्तातुर रहता है तथा धन के मामले को लेकर कभी थोड़ी बहुत बदनामी या आंशिक रूप में संघर्ष की स्थिति बन जाती है। जातक को सर्वत्र लाभ ही लाभ दिखालाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रूपों की तरह हस्तगत नहीं होता।

इस योग के प्रभाव से जातक को हृदय रोग, नेत्ररोग, अनिद्रा आदि कभी घेर लेती है। जिसमें आंशिक रूप से जातक को कष्ट उठाना पड़ता है। परिवार में विग्रह रहता है। जातक का जीवन संघर्षमय रहता है और जातक का अन्त प्रायः रहस्यमय ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

## विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव में केतु एवं शनि स्थित हैं
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ

आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराकमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

### चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्चल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरों के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

## मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

## बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

## गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

## शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान्, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

## राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

## केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- गुरु  
( 16/10/2018 - 16/10/2034 )**

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु की महादशा 16/10/2018 को आरम्भ और 16/10/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्रा, वाहन, बॉण्ड, गले, कन्धे, हँसली तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभग्रह है। आपकी जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि सातवें, नवें और ग्यारहवें भाव पर है और यह उक्त भावों के कार्यों को प्रभावित कर रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धि दायक तथा स्वास्थ्यप्रद होगी।

**स्वास्थ्य :**

साहस, पराक्रम तथा शक्ति के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी गुरु के कारण आपको शक्ति मिलेगी और आप हर तरह की कठिन परीक्षा का सामना साहसपूर्वक करेंगे। आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**धन-सम्पत्ति :**

तृतीय भाव में स्थित गुरु की दृष्टि ग्यारहवें भाव (नवें और सातवें भाव के अतिरिक्त) पर है। ग्यारहवाँ भाव लाभ का भाव है इसलिए आपको धन-सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। इस दशा के दौरान आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने में सक्षम होंगे।

**व्यवसाय :**

तृतीय भाव में स्थित ज्ञान और शिक्षा के कारक गुरु की (सातवें भाव के अतिरिक्त) ग्यारहवें तथा नवें भावों पर दृष्टि है। फलतः आपकी प्रवृत्ति साहित्यिक क्षेत्र की ओर होगी। आप लेखक या उपन्यासकार और एक साहित्यिक व्यक्ति हो सकते हैं। आप हर क्षेत्र में प्रगति करेंगे और भाई-बहनों तथा अन्य सहयोगियों, संबंधियों के सहयोग के फलस्वरूप आपको पर्याप्त लाभ मिलेगा।

**पारिवारिक जीवन :**

तृतीय भाव में स्थित गुरु की (नवें तथा ग्यारहवें भावों के अतिरिक्त) सातवें भाव पर दृष्टि है। सातवां भाव जीवनसाथी का भाव है। इसलिए आपके जीवनसाथी बहुत सहयोगी होंगे। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण तथा अनुकूल होगा। आपके बच्चे तथा छोटे भाई-बहन आपके आज्ञाकारी होंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - केतु  
( 22/09/2025 - 29/08/2026 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 16/10/2018 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 22/09/2025 को प्रारंभ होकर 29/08/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपको निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। संतान सुखकारी होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। कई विषयों या क्षेत्रों में महारत हासिल कर सकते हैं। राजनीति में दिलचस्पी हो सकती है। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी, ज्ञानार्जन होगा, भाग्यशाली रहेंगे। बड़े भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे। आपके पिता दान-धर्म में रुचि लेंगे। माता के रिश्तेदारों से उत्तम संबंध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, साझेदारी से लाभ का संकेत है। आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सब उनकी सहायता करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के धन का संचय होगा; साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंदिर में कंबल दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र  
( 29/08/2026 - 29/04/2029 )**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 16/10/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 29/08/2026 को प्रारंभ होकर 29/04/2029 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे; सब इच्छाएं आसानी से पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी। उत्साह से पूर्ण रहेंगे; लोकप्रिय बनेंगे। कला में रुचि लेंगे। सुखकारी लघुयात्राएं हो सकती हैं। उत्तम मित्रों की संगति होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। दान-धर्म में रुचि होगी। लेखन, प्रकाशन और साहित्य से लाभ हो सकता है। जीवन में सुख-शांति रहेगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए आमोद-प्रमोद, निवेश से लाभ, पारिवारिक सुख, उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे ; सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो लोकप्रिय, सफल, प्रसिद्ध बनेंगे, सम्मान होगा। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान और नेत्र की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य**  
**( 29/04/2029 - 15/02/2030 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 16/10/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/04/2029 को प्रारंभ होकर 15/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपके सब वांछित कार्य बनेंगे। उच्चपद और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। साहित्य और संचार माध्यम में सफल हो सकते हैं। उच्चशिक्षा के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल सकता है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। अपने से बड़ों और गुरुजनों का आदर करेंगे।

आपके जीवनसाथी का भाग्य उत्तम रहेगा। आपके पिता की इच्छाएं पूर्ण होंगी ; साझेदार से लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, प्रसिद्धि सुख-साधन, उच्चपद, उत्तम स्वास्थ्य और धनी संतान का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, सरकार से लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे; साख अच्छी होगी। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा। व्यापारी भाग्यशाली और धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं, गुड़ और तांबा दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र**  
**( 15/02/2030 - 17/06/2031 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 16/10/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 15/02/2030 को आरंभ होकर 17/06/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता,

स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। साहित्य और संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। वाक्शक्ति उत्तम होगी। छोटे भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। उत्तम वस्त्र प्राप्त होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। लघु यात्राएं हो सकती हैं। भाग्यशाली, प्रसन्न और धनी होंगे। संतान से सुख मिलेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी बनेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए विरासत से लाभ, सुखी पारिवारिक जीवन, सरकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, बहुत से मित्र होंगे, सफलता मिलेगी। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कुमारी कन्या को हरे वस्त्र दान में दें।